# अध्याय 9

# फसह और बादल

पूर्ववर्ती अध्यायों के समान, यह अध्याय भी दो विषयों पर केन्द्रित है। फसह मनाना (9:1-14) और बादल जो निवासस्थान में छाया करता था और जो इस्राएलियों की अगुआई करता था (9:15-23) को इस्राएलियों के सीनै छोड़ने की अंतिम तैयारी और प्रतिज्ञा की देश की ओर यात्रा को संबंधित करता है। इस्राएलियों का सीनै छोड़ने के द्वितीय महीने के चौदहवें दिन (9:11) अर्थात् ठीक छः दिन पहले, द्वितीय माह के बीसवें दिन फसह मनाया गया था, जब "बादल साक्षी के निवास पर से उठ गया" था (10:11)।

## फसह मनाया जाना (9:1-14)

**[1]इस्राएलियों के मिस्र देश से निकलने के दूसरे वर्ष के पहले महीने में यहोवा ने सीनै के जंगल में मूसा से कहा, [2]"इस्राएली फसह नामक पर्व को उसके नियत समय पर मनाया करें। [3]अर्थात् इसी महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय तुम लोग उसे सब विधियों और नियमों के अनुसार मानना।" [4]तब मूसा ने इस्राएलियों से फसह मनाने के लिए कह दिया। [5]और उन्होंने पहले महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय सीनै के जंगल में फसह को मनाया; और जो जो आज्ञाएँ यहोवा ने मूसा को दी थीं उन्हीं के अनुसार इस्राएलियों ने किया। [6]परन्तु कुछ लोग एक मनुष्य के शव के द्वारा अशुद्ध होने के कारण उस दिन फसह को न मना सके; वे उसी दिन मूसा और हारून के समीप जाकर मूसा से कहने लगे, [7]"हम लोग एक मनुष्य के शव के कारण अशुद्ध हैं; परन्तु हम क्यों रुके रहें, और इस्राएलियों के संग यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर क्यों न चढ़ाएँ?" [8]मूसा ने उन से कहा, "ठहरे रहो, मैं सुन लूँ कि यहोवा तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा देता है।" [9]यहोवा ने मूसा से कहा, [10]"इस्राएलियों से कह कि चाहे तुम लोग चाहे तुम्हारे वंश में से कोई भी किसी लोथ के कारण अशुद्ध हो, या दूर की यात्रा पर हो, तौभी वह यहोवा के लिए फसह को माने। [11]वे उसे दूसरे महीने के चौदहवें दिन को गोधूलि के समय मनाएँ; और फसह के बलिपशु के मांस को अखमीरी रोटी और कड़वे सागपात के साथ खाएँ। [12]और उसमें से कुछ भी सबेरे तक न रख छोड़ें, और न उसकी कोई हड्डी तोड़ें; वे उस पर्व को फसह की सारी विधियों के अनुसार मनाएँ। [13]परन्तु जो मनुष्य शुद्ध हो और यात्रा पर न हो, परन्तु फसह के पर्व को न माने वह प्राणी अपने लोगों में से नष्ट किया जाए, उस मनुष्य को यहोवा का चढ़ावा**

**नियत समय पर न ले आने के कारण अपने पाप का बोझ उठाना पड़ेगा। 14यदि कोई परदेशी तुम्हारे साथ रहकर चाहे कि यहोवा के लिए फसह मनाए तो वह उसी विधि और नियम के अनुसार उसको माने; देशी और परदेशी दोनों के लिए तुम्हारी एक ही विधि हो।"**

**आयतें 1-5.** यहोवा की यह आज्ञा थी कि **फसह नामक पर्व को उसके नियत समय पर**, अर्थात् प्रथम महीने के **चौदहवें दिन**, मनाया जाए। यहूदी कैलेंडर के अनुसार अबीब, प्रथम महीना था जो बाद में नीशान कहलाया, जिसका संबंध आधुनिक कैलेंडर के मार्च/अप्रैल माह से है (देखें निर्गमन 12:2)। **जब वे मिस्र देश से निकले थे, तो यह विशेष आज्ञा सीनै के जंगल में, द्वितीय वर्ष के प्रथम महीने** में **दी गई थी** (देखें *परिशिष्ट: गिनती 7 और 9 में समय के क्रम के सूचक दिए गए हैं,* पृष्ठ 160)। फसह मनाना और इसका अनुसरण वास्तविक रूप से करना, गिनती करने की आज्ञा मिलने से पहले हो गया था (1:1)। इस्राएलियों को फसह, **इसकी व्यवस्था और विधियों के अनुसार** मनाना था। उन्होंने **यहोवा की आज्ञा के अनुसार** वैसा ही किया।

**गोधूलि** का अक्षरशः अर्थ "दो संध्या की बीच" का समय है।[1] इस भावाभिव्यक्ति का अनुवाद भिन्न-भिन्न तरीके से किया गया है, लेकिन संभवतः इसका अर्थ "सूर्य छिपने और पूर्ण अंधेरा होने" का समय था।

इस्राएलियों की आज्ञाकारिता पर अधिक महत्व दिया गया है। गिनती की पुस्तक के प्रथम दस अध्यायों में, इस्राएलियों को परमेश्वर की आज्ञा का पूरी तरह पालन करते हुए दर्शाया गया है - जो इस पुस्तक की बाद के अध्यायों में वर्णित देश **के** व्यवहार के विपरीत है।

इस्राएलियों ने जिस रात मिस्र से निर्गमन आरंभ किया था उसी रात प्रथम फसह मनाया गया था। परमेश्वर ने मिस्रियों पर पहलौठों की दसवीं विपत्ति भेजी लेकिन यह प्रतिज्ञा की थी कि वह इस्राएलियों को बचाएगा। हरेक परिवार को अपने दरवाजों के दहलीज व चौखटकों पर मेम्ने का लहू लगाना था। जब परमेश्वर ने लहू देखा तो वह उस घर को "छोड़कर" आगे बढ़ गया और उस घर के पहलौठों को उसने नहीं मारा (देखें निर्गमन 12:13, 23, 27)। फसह का पर्व इस अवसर को स्मरण दिलाता है जो बंधुआई से छुटकारे को सुनिश्चित करता है। फसह का पर्व (और अख़मीरी रोटी का पर्व जो इससे जुड़ा हुआ है) मनाने संबंधी निर्देश निर्गमन 12 और 13 में पाया जाता है और पंचग्रंथ के अन्य भागों में इसका विस्तारीकरण किया गया है (निर्गमन 23:14-17; लैव्य. 23:5-14; गिनती 28:16-25; व्यव. 16:1-8)। दूसरे वर्ष के प्रथम महिने के चौदहवें दिन जो फसह मनाया जाता है वह इस्राएलियों द्वारा मनाया जाने वाला दूसरा फसह हो सकता है जो मिस्र से छुटकारे की प्रथम वर्षगांठ को स्मरण दिलाता होगा।

**आयतें 6, 7.** जब फसह का पर्व मनाया जाता था, तो **कुछ लोग, जो मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध ठहरे थे**, मूसा और हारून के पास यह पूछने के लिए आए: **"हम लोग एक मनुष्य की लोथ के कारण अशुद्ध हैं; परन्तु हम क्यों रूके रहें,**

**और इस्राएलियों के संग यहोवा का चढ़ावा नियत समय पर क्यों न चढ़ाएं?"** इन अज्ञात लोगों की कुछ विशेषताएं सराहनीय है। (1) उन्होंने अपनी अशुद्धता की पहचान कर ली थी और इस संबंध में व्यवस्था की मांग के प्रति चिंतित थे। (2) उन्होंने फसह के पर्व में भाग लेने और भेंट चढ़ाने की इच्छा जताई थी। (3) उचित स्रोत - मूसा, जो परमेश्वर का प्रतिनिधि था, से उन्होंने मार्गदर्शन चाहा।

**आयत 8.** ईश्वरीय मार्गदर्शन के लिए, मूसा इस प्रश्न को परमेश्वर के सम्मुख ले गया। उसने उनको कहा, **"ठहरे रहो, मैं सुन लूं कि यहोवा तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा देता है।"**

**आयतें 9-13.** परमेश्वर ने उत्तर दिया कि फसह की निर्धारित तिथि में जो **अशुद्ध** थे या **दूर की यात्रा पर** रहे हों, वे उसे एक महीने पश्चात (ज़ीव के महिने के दौरान) मना सकते थे। यह समयावधि एक अशुद्ध व्यक्ति और यात्रा पर गए यात्री को घर वापसी कर, अपनी शुद्धता पुनः प्राप्त करने का अवसर प्रदान करेगा।[2] फिर भी, जो फसह का पर्व मनाने से वंचित रह गए थे कि उनकी भेंट स्वीकार की जाए, यहोवा ने इस संदर्भ में दो शर्तें रखीं। पहला, उनको इसे **फसह की सारी विधियों के अनुसार मनाएँ**। फसह के मेम्ने को **अखमीरी रोटी और कड़ुवे सागपात के साथ खाना** था (निर्गमन 12:8); उसको पूरा खाना था, **कुछ भी सुबह तक नहीं छोड़ना** था (निर्गमन 12:10); और उसको उसकी **कोई भी हड्डी नहीं तोड़ना** था (निर्गमन 12:46)। दूसरा, वह जानबूझकर फसह मनाना नहीं छोड़ सकता था। यदि कोई जानबूझकर फसह नहीं मनाता था **वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए** और उसे **अपने पाप का बोझ उठाना पड़ेगा**। डब्लू. एच. बेलिंगर, जूनियर, ने सोचा कि "उसके लोगों में से नाश किया जाए" का अर्थ "मार देना, ईश्वरीय दण्ड देना, या बेदखल" करना है।[3]

**आयत 14.** अंततः, यहोवा ने मूसा और इस्राएलियों को स्मरण दिलाया कि उनके बीच रहने वाले **परदेशी** (गैर इस्राएल) के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाना चाहिए था, बल्कि उन्हें भी स्थानीय लोगों (इस्राएलियों) के समान फसह मनाने का अवसर, **उसी विधि और नियम के अनुसार**, प्रदान किया जाना चाहिए था। "फसह की विधि और नियम" के अनुसार यदि परदेशी का खतना किया गया था, तो परिणामस्वरूप वह एक इस्राएली हो जाता था, ऐसी स्थिति में वह फसह मनाने में भाग ले सकता था (निर्गमन 12:43-49)।

चौदहवीं आयत के संदर्भ में दो बातों का और अवलोकन किया गया है। प्रथम, आयत 10 की यात्रा से संबंधित विधि के समान, परदेशी से संबंधित यह विधि "जंगल के समुदाय से थोड़ा प्रासंगिक है लेकिन कनान की जीवन शैली से यह पूरी तरह प्रासंगिक जान पड़ती है।"[4] द्वितीय, "परदेशी" (גֵּר, *गेर)* शब्द इस्राएलियों के बीच रहने वाले (या उनके बीच जो रहेंगे) लोगों से भेद करता है, लेकिन उनको फसह खाने से मना किया गया था (निर्गमन 12:43, 45)।[5] NASB में, ये "विदेशी" (בֶּן־נֵכָר, *बेन-नेकार)*, "मूसाफिर" (תּוֹשָׁב, *थोसाब)*, और "दिहाड़ी मजदूर" (שָׂכִיר, *साकिर)* सम्मिलित किए गए हैं।

इस बात की अधिक संभावना है कि "फसह" से संबंधित यह पाठ गिनती की

पुस्तक में इन लोगों द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देने के लिए सम्मिलित किया गया है। उनके प्रश्न, मूसा का प्रतिक्रिया, और परमेश्वर का उत्तर, यह उदाहरण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार परमेश्वर ने जंगल में अपने लोगों को अपनी कई विधियां प्रकट की थी। एकल घटनाएं प्रश्न उठाती थीं जिसका उत्तर या तो परमेश्वर के सीधा प्रकाशन के द्वारा दिया गया था या फिर मूसा, परमेश्वर के प्रतिनिधि और इस्राएलियों को व्यवस्था देने वाले, के द्वारा दिया गया था। ये उत्तर तब वैधानिक उदाहरण बन गया; ये विधि और नियम जो मूसा को सीनै पर्वत पर दिया गया था, उस व्यवस्था का भाग बन गया। उदाहरण-स्थापित करने की अन्य घटनाएं लैव्यव्यवस्था 24:10-16 और गिनती 15:32-41; 27:1-11; 36:1-9 में पाई जाती है।

## बादल के द्वारा अगुआई किया जाना (9:15-23)

**15जिस दिन निवास जो साक्षी का तम्बू भी कहलाता है खड़ा किया गया, उस दिन बादल उस पर छा गया; और सन्ध्या को वह निवास पर आग-सा दिखाई दिया और भोर तक दिखाई देता रहा। 16नित्य ऐसा ही हुआ करता था; अर्थात् दिन को बादल छाया रहता, और रात को आग दिखाई देती थी। 17और जब जब वह बादल तम्बू पर से उठ जाता तब इस्राएली प्रस्थान करते थे; और जिस स्थान पर बादल ठहर जाता वहीं इस्राएली अपने डेरे खड़े करते थे। 18यहोवा की आज्ञा से इस्राएली प्रस्थान करते थे, और यहोवा ही की आज्ञा से वे डेरे खड़े भी करते थे; और जितने दिन तक वह बादल निवास पर ठहरा रहता उतने दिन तक वे डेरे डाले पड़े रहते थे। 19जब बादल बहुत दिन निवास पर छाया रहता तब भी इस्राएली यहोवा की आज्ञा मानते, और प्रस्थान नहीं करते थे। 20कभी-कभी वह बादल थोड़े ही दिन तक निवास पर रहता, और तब भी वे यहोवा की आज्ञा से डेरे डाले पड़े रहते थे; और फिर यहोवा की आज्ञा ही से वह प्रस्थान करते थे। 21और कभी कभी बादल केवल सन्ध्या से भोर तक रहता; और जब वह भोर को उठ जाता था तब वे प्रस्थान करते थे, और यदि वह रात दिन बराबर रहता तो जब बादल उठ जाता तब ही वे प्रस्थान करते थे। 22वह बादल चाहे दो दिन, चाहे एक महीना, चाहे वर्ष भर, जब तक निवास पर ठहरा रहता तब तक इस्राएली अपने डेरों में रहते और प्रस्थान नहीं करते थे; परन्तु जब वह उठ जाता तब वे प्रस्थान करते थे। 23यहोवा की आज्ञा से वे अपने डेरे खड़े करते, और यहोवा ही की आज्ञा से वे प्रस्थान करते थे; जो आज्ञा यहोवा मूसा के द्वारा देता था उसको वे माना करते थे।**

इस अध्याय का दूसरा भाग, इस्राएलियों **की** बादल के द्वारा किस प्रकार अगुआई की गई, का विश्लेषण करता है, जो प्रतिज्ञा के देश की ओर यात्रा में परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतिनिधित्व करता है। यह अनुच्छेद निर्गमन 40:34-38 में बादल के बारे में दी गई सूचना का विस्तृत उल्लेख करता है।

**आयतें 15, 16.** ये आयतें यह प्रकट करती है कि जब मिलापवाला **तम्बू** खड़ा

किया गया था तो उस पर **बादल** (עָנָן, *'अनान)* **छाया** हुआ था। यद्यपि इस आयत में इस बात का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन यह घटना मिस्र छोड़ने के दूसरे वर्ष के पहले महिने के पहले दिन की घटना है (देखें निर्गमन 40:2, 17, 34, 35)। दिन में परमेश्वर की उपस्थिति बादल के समान प्रतीत होती थी और रात को **आग** के समान **दिखाई** देती थी। इस तरह यह निरंतर दिखाई देती रही।

**आयतें 17-23.** इस्राएलियों ने बादल द्वारा दिखाए गए दिशा निर्देशन का अनुपालन कियाः जब-जब यह उठ जाता था, तो वे **प्रस्थान करते थे**; और जब यह **ठहर जाता** था - तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था कि यह दीर्घकालीन या अल्पकालीन समयावधि के लिए ठहरे - वे वहीं पर **डेरा** डालते थे। एक स्थान पर वे कितने समयावधि के लिए ठहरते थे, इसमें भिन्नता है। **और जितने दिन तक वह बादल निवास पर ठहरा रहता उतने दिन तक वे डेरे डाले पड़े रहते थे।** हम पढ़ते हैं कि बादल **बहुत दिन** (9:19), **थोड़े ही दिन** (9:20), **सन्ध्या से भोर तक** (9:21), और **दो दिन, चाहे एक महीना, चाहे वर्ष भर** (9:22) तक ठहरता था। इब्रानी शब्द יָמִים *(यामीम)* का अनुवाद "एक वर्ष" किया गया है जिसका यथाअर्थ "दिन" है। आमतौर पर यह एक लम्बे समयावधि को संबोधित करता है, लेकिन यह बहुवचन रूप, अक्सर पूरे वर्ष के लिए प्रयोग किया गया है।[6] यह अनुच्छेद, बादल के उठने को यहोवा की आज्ञा से जोड़ता है। लगभग नौ बार, यह अनुच्छेद **यहोवा की आज्ञा** या **यहोवा के आदेश** के बारे में बोलता है, जो यह पुष्टि करता है कि हर बार लोगों ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया था। उदाहरण के लिए गिनती 9:23 कहता है, **यहोवा की आज्ञा से वे अपने डेरे खड़े करते, और यहोवा ही की आज्ञा से वे प्रस्थान करते थे; जो आज्ञा यहोवा मूसा के द्वारा देता था उसको वे माना करते थे।** एक बार फिर से लोगों का परमेश्वर की आज्ञा मानने पर जोर दिया गया है।

यह अनुच्छेद ऐतिहासिक दृष्टिकोण से लिखा गया है। लेखक इस बात को संबंधित नहीं करता है कि किस प्रकार परमेश्वर ने उन्हें बादल उठने पर उसका अनुपालन करने के बारे में निर्देशित किया था। बल्कि, भूतकाल की क्रियाओं का प्रयोग करते हुए मूसा ने इसे यात्रा समाप्ति के दृष्टिकोण से लिखा है - उस समय से जब इस्राएली लोग प्रतिज्ञा की देश की सीमा पर पहुँचे थे - यह बताने के लिए कि किस प्रकार इस्राएली लोगों की इस यात्रा में अगुआई की गई थी। स्पष्टतया, यह पाठकों को यह स्पष्ट करने के लिए लिखा गया था, इन घटनाओं में सहभागी लोगों को नहीं, जो इन घटनाओं के कुछ समय पश्चात जंगल में घटित हुई थी। इसलिए, इस अनुच्छेद का उद्देश्य, पाठकों को इस्राएलियों की सीनै से यात्रा प्रारंभ करने से ठीक पहले, इस बात का विश्लेषण करते हुए कि किस प्रकार परमेश्वर ने उनको दिशा निर्देशित किया था, के वृतांत के लिए तैयार करना था।

# अनुप्रयोग

## फसह और मसीही (9:1-14)

कई तरीकों से, फसह मसीही युग का पूर्वाभास था। नया नियम यह शिक्षा देता है कि मसीह हमारा फसह का मेमना है (1 कुरि. 5:7; देखें यूहन्ना 1:29)। उसकी मृत्यु की घटना का सम्बन्ध फसह के पर्व से है, और सम्भवतः उस घड़ी से जब फसह के मेमनों को बलि किया जा रहा था। फसह के मेमने के समान, उसकी मृत्यु के समय उसकी हड्डियाँ नहीं तोड़ी गईं (यूहन्ना 19:36; देखें गिनती 9:12)।

जिस प्रकार इस्राएलियों को मेमने के लहू से बचाया गया था ठीक उसी प्रकार, हम अपने फसह के मेमने यीशु मसीह के लहू के द्वारा बचाए गए हैं (1 पतरस 1:18, 19)। यीशु ने फसह के भोज के समय प्रभु भोज की स्थापना की, हमें पाप की बंधुआई से हमारे छुटकारे को स्मरण दिलाने के लिए, जो हमारे फसह के मेमने के द्वारा हमारे लिए सुरक्षित है। मसीहियों के रूप में, हमें कलीसिया के साथ एकत्र होने और प्रभु के भोज में भाग लेने के अवसर की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए (इब्रा. 10:25)। हमें इसमें उचित रीति से भाग लेने की भी आवश्यकता है; अन्यथा, हम वास्तव में "नाश हो जाएंगे" (1 कुरि. 11:27, 30)।

## उपेक्षा करने का पाप (9:1-14)

कोई भी इस्राएली जो, जिसकी स्वयं की कोई कमी नहीं थी, यदि वह फसह में भाग लेने के योग्य नहीं था, वह एक महीने बाद ऐसा कर सकता था। हालाँकि, एक ऐसा व्यक्ति जो "शुद्ध" था और "यात्रा में नहीं था" और उसने फसह का अनुसरण करने की उपेक्षा की थी "उसे उसके लोगों में नाश कर दिया जाता था" और "वह अपने पाप बोझ" स्वयं उठाता था (9:13)। व्यवस्था में जानबूझकर किए गए पाप के लिए कोई भी उपाय नहीं दिया गया (देखें 15:30, 31)। फसह के विषय में नियम उस सिद्धान्त के अनुरूप है। यह केवल इतना ही अलग है कि फसह की उपेक्षा करने का पाप परमेश्वर ने जो कुछ मना किया था उसे करने की बजाए, परमेश्वर ने जो आज्ञा दी थी उसे करने में विफल होने का पाप था। दोनों मामलों में, पापी "नष्ट होगा"; व्यवस्था ने कहा, "वह अपने पाप का बोझ स्वयं उठाएगा" (15:31)। नया नियम इसी प्रकार सिखाता है कि उन मसीहियों के लिए कोई बलिदान बाकी नहीं है जो जानबूझकर पाप करते हैं; वे परमेश्वर के क्रोध का अनुभव करेंगे (इब्रा. 10:26-31)।

## अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा की खोज करना (9:15-23)

क्योंकि हम नए नियम के प्रकाशन में क्रूस के इस ओर खड़े हैं, हम आलोचनात्मक तरीके से पुराने नियम के लोगों के व्यवहार की जाँच कर सकते हैं, विशेषतः इस्राएल की। जब उस विषय में पढ़ते हैं कि उन्होंने क्या देखा था और कम से कम आंशिक रूप से उसे समझा था, हम उनके अविश्वास पर अपने सिर

हिलाते हैं (इब्रा. 3:17-19)। परमेश्वर के साथ उनकी यात्रा लगभग आँखों देखी थी। परमेश्वर का मार्गदर्शन एक अनुभवजन्य यात्रा थी; परमेश्वर के कार्य तुरन्त समझने योग्य थे। गिनती 9:15-23 में, मूसा ने घोषणा की और कहा कि जब भी परमेश्वर चाहता था कि इस्राएल आगे बढ़े, तो केवल वह उस बादल को आगे ले जाता था जो तम्बू पर खड़ा था। तब, इस्राएल के लिए परमेश्वर के निर्देशों का पालन करना और यह जानना कि परमेश्वर क्या चाहता था, अपेक्षाकृत सरल था। यदि वे एक न्याय के अभिलाषी होते या व्यवस्था के नियमों के बारे में सूचित होना चाहते थे, तो वे मूसा या याजकों के पास जाते थे। व्यवस्था ने उन्हें व्यावहारिक रूप से सब कुछ करने के लिए नियम दिए थे। वे जान सकते थे कि परमेश्वर की सेवा किस प्रकार और कब की जानी चाहिए।

क्रूस के इस ओर हमारे लिए यह किस प्रकार भिन्न है! पौलुस ने आज्ञा दी कि "हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं" (2 कुरि. 5:7)। परमेश्वर ने न केवल नियमों को बदला, बल्कि उसने उन रीतियों को भी बदल दिया जिनसे उसकी इच्छा का पता लगाया जा सकता था। वह अब और बादलों या पर्वतों पर नहीं दिखाई देता या न जंगल से फटे हुए कपड़े पहने हुए भविष्यद्वक्ताओं द्वारा निर्देश भेजता है। यह शायद सबसे बड़ी समस्या है जिससे हम अपने दैनिक जीवन में संघर्ष करते हैं। हम यह निश्चय किस प्रकार करते हैं कि हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है?

*बाइबल के उदाहरण: क्या ये आज भी मान्य हैं?* हमारा शब्द बताता है कि जब इस्राएल ने प्रतिज्ञा के देश की यात्रा की तो परमेश्वर के नियम उनके लिए क्या थे। उनके चालीस वर्ष के भटकने के बाद, परमेश्वर ने इस्राएल के निर्देश के लिए स्वर्गीय चिन्हों को देना बन्द कर दिया। पुराने नियम के चिन्ह उनके इच्छानुसार उपयोग में विशिष्ट थे और सभी के पालन करने के लिए सामान्य निर्देश नहीं थे। परमेश्वर आज अपने लोगों पर अपनी इच्छा को इस प्रकार प्रकट नहीं करता (देखें इब्रा. 1:1, 2)। कई लोग गिदोन और उसके ऊन का उपयोग एक चिन्ह मांगने के एक आदर्श उदाहरण के रूप में करने का प्रयास करते हैं। कुछ पुस्तकों ने सुझाव दिया कि मसीही आज "एक ऊन को बाहर निकालते हैं।" हालाँकि, गिदोन की अनूठी स्थिति के एक करीबी अध्ययन से पता चलता है कि उसका अनुभव विश्वास-निर्देशित से अधिक दृष्टि-उन्मुख था। गिदोन के दो ऊन चिन्हों के लिए विनती उसके जीवन में परमेश्वर की इच्छा को किस प्रकार पूरा करे, इस पर विशिष्ट निर्देशों की इच्छा के बजाए विश्वास की कमी से थी। वह परमेश्वर के विश्वास-के खोजी अनुयायी के बजाए एक डरपोक न्यायी था।

नए नियम के विषय में क्या? क्या नए नियम के उदाहरण प्रामाणिक हैं? नए नियम में परमेश्वर से प्रत्यक्ष मार्गदर्शन प्राप्त करने वाले मामलों की दर्ज संख्या यह कहने के लिए अपर्याप्त है कि यह पहली शताब्दी के मसीही के लिए एक सामान्य या दैनिक अनुभव था। नए नियम में परमेश्वर से प्रत्यक्ष व्यक्तिगत मार्गदर्शन के केवल पंद्रह या बीस उदाहरण हैं। कहा जाता है कि प्रभु के दो प्रेरितों पौलुस और पतरस के अलावा, केवल तीन लोगों ने प्रत्यक्ष प्रकाशन का अनुभव किया था। उन

तीन प्राप्त करने वालों में फिलिप्पुस, हनन्याह और कुरनेलियुस थे। इन मनुष्यों में से प्रत्येक ने स्वयं को परमेश्वर के राज्य के प्रसार में एक रणनीतिक ऐतिहासिक बिंदु पर पाया। फिलिप्पुस सामरियों को मसीह में लेकर आया (प्रेरितों 8)। विशेष प्रकाशन से, हनन्याह को तरसुस के शाऊल को यह शिक्षा देने के लिए भेजा गया था कि उसे उद्धार पाने के लिए क्या करना है (प्रेरितों 9)। फिलिप्पुस को इथियोपियाई (प्रेरितों 8) के पास भेजा गया था। कुरनेलियुस परमेश्वर के राज्य में परिवर्तित पहला रोमी था, और उसके परिवर्तन ने सिद्ध किया कि सुसमाचार सभी लोगों के लिए था (प्रेरितों 10)। ये उदाहरण परमेश्वर के राज्य के परिणामों के लिए थे, न कि जीवन के सामान्य मामलों के लिए। एक मसीही के लिए परमेश्वर की व्यक्तिगत इच्छा नए नियम के उदाहरणों में सम्मिलित नहीं है। उन सभी निर्णयों का मसीह के सुसमाचार पर कुछ प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा था। जबकि प्रेरितों के कामों के उदाहरण अलौकिक प्रकाशन के स्पष्ट उदाहरण हैं, हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि प्रत्यक्ष प्रकाशन आज परमेश्वर के बात करने के सामान्य माध्यम नहीं है।

*परमेश्वर की इच्छा: परमेश्वर की कितनी इच्छाएँ हैं?* परमेश्वर की इच्छा के विषय में उचित व्यवहार रखना उन बहुत से लोगों के लिए प्रायः एक संघर्ष है जो उसकी खोज करते हैं? क्या हम वास्तव में जानना चाहते हैं कि हमारे जीवन के लिए उसकी इच्छा क्या है? परमेश्वर की इच्छा के बारे में बताने वाले गीत प्रायः "पद त्याग," "अधीनता" या "परीक्षा" के शीर्षक के अंतर्गत सूचीबद्ध होते हैं। हमें विश्वास है कि परमेश्वर की इच्छा सुख के विपरीत है। बाइबल इसके विपरीत शिक्षा देती है। सच्चा आनन्द, शांति और भरपूरी हमारे स्वार्थ में नहीं, बल्कि उसकी इच्छा पूरी करने में पाई जाती है।

परमेश्वर की तीन इच्छाएँ हैं: उसकी परम इच्छा, उसकी नैतिक इच्छा, और उसकी दयालु इच्छा। आइए हम इन पर अलग-अलग दृष्टि डालें। परमेश्वर की परम इच्छा वह है जिसके माध्यम से उसके अन्तिम उद्देश्य और अनन्त योजनाएं मनुष्यों के स्वतंत्र चुनावों का उल्लंघन किए बिना पूरी की जाती हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने शैतान को उस समय पूरी रीति से मनुष्य का नाश करने नहीं दिया जब पापमय संसार पर जलप्रलय आया था। नूह पर "परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि बनी रही" (उत्पत्ति 6:8), और उत्पत्ति 3:15 की धर्मी वंश बेल बनी रही। प्रेरितों 2:23 में, पतरस ने घोषणा की और कहा कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाने का भीड़ का कार्य यहूदियों की योजना नहीं था, हालाँकि ऐसा करने के लिए उन्होंने महीनों तक षड्यंत्र रचा था, परन्तु परमेश्वर की स्वयं की पूर्वनियति और कार्य के द्वारा यह किसी के भी स्वतंत्र चुनाव का उल्लंघन किए बिना पूरा हुआ। बाद में पौलुस ने इसे परमेश्वर का अनन्त उद्देश्य कहा (इफि. 3:10, 11)। उसने लिखा कि वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं (कुलु. 1:17)।

परमेश्वर की एक नैतिक इच्छा है। व्यवहारिक परिभाषा में, यह परमेश्वर का चरित्र है। उसने पुराने नियम और नए नियम दोनों में घोषणा की और कहा कि "पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ" (लैव्य. 11:44, 45; 1 पतरस 1:16)। परमेश्वर

की पवित्रता का प्रतिबिम्ब बनने के द्वारा, इस्राएल को "जातियों के लिए प्रकाश" बनना था (यशा. 42:6)। मसीहियों के रूप में, हमारा "प्रकाश मनुष्यों के सामने चमके" ताकि परमेश्वर की महिमा हो (मत्ती 5:16)। हमें निश्चय ही धर्मी आचरण का उदाहरण बनना चाहिए।

परमेश्वर की एक दयालु इच्छा भी है। परमेश्वर ने अपनी इच्छा को प्रकट किया कि सभी मनुष्यों का उद्धार हो (1 तीमु. 2:4)। हालाँकि, वह प्रत्येक व्यक्ति को उसके मार्ग को चुनने की अनुमति देता है। बहुसंख्यक लोगों ने सृष्टिकर्ता का आदर करने की बजाए सृष्टि का आदर करने का चुनाव किया है, फिर भी परमेश्वर स्वतंत्र चुनाव को प्रभुता करने देता है (प्रेरितों 14:16; रोम. 1:18-27)।

*मेरा जीवन: मैं किस प्रकार इसके लिए परमेश्वर की इच्छा को खोजूँ?* परमेश्वर हमारे जीवनों को निर्देशित करने के लिए हमें ईश्वरीय सिद्धान्त प्रदान करता है। उसकी इच्छा कई सीमाओं के द्वारा ज्ञात होती है, परन्तु उन सीमाओं के भीतर चलने की अनुमति दी गई है। दो उदाहरण इस बिंदु का चित्रण करते हैं। रोमियों 14 में, पौलुस ने कहा मसीहियों के बीच में विभिन्न जीवन शैलियों का अस्तित्व हो सकता है। कोई व्यक्ति केवल साग-पात खाने का चुनाव कर सकता है; अन्य यह सोच सकता है कि मांस भी उचित हैं। दोनों ही प्रभु और एक दूसरे के सेवक हैं, तो विवाद क्यों (1 कुरि. 8; 9)? पौलुस ने कहा कि प्रभाव और सुसमाचार के विषय में कुछ निर्णय इस रीति के अनुसार किए जाने चाहिए जिस तरह से परिस्थितियाँ स्वयं को प्रस्तुत करती हैं। अन्त में यह व्यक्ति है जो तय करेगा कि वह कौन से मार्ग पर यात्रा करेगा। यह किसी भी मामले में यह सुझाव नहीं देता कि एक अच्छा विवेक ही हमारा एकमात्र मार्गदर्शक है। हमारे लक्ष्यों को बाइबल के अनुसार वैध होने की आवश्यकता है। वे परमेश्वर की नैतिक इच्छा के क्षेत्र से बाहर नहीं हो सकते (इफि. 5:1-14)। हमारे द्वारा किए गए सभी प्रमुख निर्णय, जैसे कि जीवन के लिए एक साथी चुनना या नौकरी लेना, परमेश्वर की नैतिक इच्छा की सीमाओं के भीतर होना चाहिए। वह नैतिक इच्छा पूरी तरह से पवित्रशास्त्र में प्रकट की गई है (2 तीमु. 3:16, 17)।

हमें उन बातों को निर्धारित करने में भी ज्ञान की खोज करनी चाहिए जिन्हें हम कर सकते हैं। प्रायः हमारे सामने कई अच्छे और नैतिक विकल्प होते हैं, जिनमें से प्रत्येक परमेश्वर की महिमा करवा सकता है। कौन सा सबसे अच्छा विकल्प होगा? कई वाक्यांश घोषित करते हैं कि हमें ऊपर से ज्ञान मांगना और उपयोग करना चाहिए (इफि. 5:15-17; याकूब 1:5; 3:13-18)। प्रार्थना ज्ञान से निकटता से जुड़ी हुई है (याकूब 4:2)।

पौलुस ने कहा कि परमेश्वर उसकी व्यक्तिगत उपस्थिति के द्वारा उसकी इच्छा पूरी करने में हमारी सहायता करता है (फिलि. 2:13)। वह हमें उस पर विश्वास करने की अनुमति देता है। आज्ञाकारिता का हर कार्य हमारे जीवन में परमेश्वर की व्यक्तिगत भागीदारी का प्रमाण है (रोम. 8:5-8)। जब हम परमेश्वर की नैतिक इच्छा के बारे में जो समझते हैं उसका विवेक से पालन करते हैं और हमारे निर्णयों में परमेश्वर के वचन के सिद्धान्तों को लागू करने का प्रयास करते हैं, तो हम विश्वास

का प्रदर्शन करते हैं। जब हम परमेश्वर को उसके वचन पर गंभीरता से लेते हैं तो हम विश्वास व्यक्त करते हैं और जब हम समझते हैं कि परमेश्वर की इच्छा है कि स्वतंत्रता के क्षेत्र में चुनाव हमारे द्वारा किए जाएंगे। यह उसके नैतिक मार्गदर्शन का उत्तर है।

*उपसंहार।* जो चुनौती परमेश्वर के पास हमारे लिए है वह उसकी परम और नैतिक इच्छा का पालन करना है। वह हमारे जीवन में हमारे चुनाव करने की स्वतंत्रता के क्षेत्र में, हमारी सबसे उत्तम यात्रा में जो हम समस्त जीवन में कर सकते हैं मार्गदर्शन करने के द्वारा कार्य करता है। GMT

---

समाप्ति नोट्स

[1]एरिल डब्लू. डेवीस, *गिनती,* द न्यू सेंचुरी बाइबल कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1995), 81-82. [2]आर. के. हैरिसन, *गिनती: एन एक्सेजेटिकल कमेंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1992), 160. [3]डब्लू. एच. बेलिंगर, जूनियर, *लैव्यव्यवस्था, गिनती,* न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेंट्री (पीबॉडी, मासाचुसेट्सः हेन्ड्रिक्शन पब्लिशर्स, 2001), 214; देखें गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती,* द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 99. [4]टिमोथी आर. एशली, *द बुक ऑफ़ गिनती,* द न्यू इंटरनेशनल कमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टमेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1993), 181. [5]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, एण्ड चार्ल्स ए. ब्रिग्गस, *ए हिब्रू एंड इंग्लिश लेक्सिकॉन ऑफ़ द ओल्ड टेस्टमेंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस, 1972), 399.